# पाठ 14. दो तोते

## पाठ का परिचय

किसी जंगल में एक घना पेड़ था। उसपर तोतों का एक जोड़ा घोंसला बनाकर रहता था। उनके दो बच्चे थे, हीरा और मोती। हीरा और मोती अभी छोटे थे। अत: उनके माता-पिता उन्हें खाना लाकर दिया करते थे। एक दिन उनके माता-पिता खाना लाने गए थे तभी एक शिकारी ने उन दोनों को पकड़ लिया। उसने हीरा को एक सज्जन व्यक्ति के हाथों तथा मोती को एक दुष्ट व्यक्ति के हाथों बेच दिया। एक दिन उन दोनों को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उनके माता-पिता आए और उन्हें छुड़ाकर ले गए। हीरा-मोती जब बड़े हुए तो दोनों ने अलग-अलग जगह अपना घोंसला बनाया। एक राहगीर पहले उस पेड़ के नीचे आकर विश्राम करने बैठा जहाँ मोती ने घोंसला बनाया था। उसे देख मोती उसे लूट लेने की बातें करने लगा। राहगीर डरकर भाग गया। जब वह हीरा के बने घोंसले के पेड़ के नीचे आराम करने लगा तो हीरा ने उसका प्यार से स्वागत किया। राहगीर उसकी बातों से प्रसन्न हो गया और वहीं आराम करने लगा।

## पाठ में निहित जीवन-मूल्य

संगति का प्रभाव हम पर सदैव पड़ता है। अत: सदैव अच्छी संगति में रहना चाहिए।

## पाठ का वाचन

पहले स्वयं आदर्श वाचन करें। बच्चों को एक-एक अनुच्छेद पढ़ने को कहें। उच्चारण पर ध्यान दें। कहानी से संबंधित छोटे-छोटे प्रश्न बीच-बीच में पूछते रहें।

## महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- संगति का क्या अर्थ है?
- अच्छी व बुरी संगति में क्या अंतर है?
- तुम कैसे बच्चों की संगति में रहते हो?
- गंदे बच्चों की संगति में रहने से क्या होगा?